आंचलिक सामंजस्य कार्यषाला संपन्न

शान व सम्मान पाने के लिए सहिष्णुता का भाव पुष्ट बने

– युवाचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, 9 अप्रैल।

दुनिया में अयथार्थ भी चलता है और यथार्थ का महत्त्व भी होता है। कमजोरियां भी चलती है और बलवता भी देखने को मिलती है। इच्छुक व्यक्ति के लिए जरूरी है कि वे सच्चाईयों को समझने का प्रयत्न करे। उपाय खोजने की वांछा की गई कि बेटी परिवार की शान व सम्मान कैसे बने? सच्चाईयों को खोजने का प्रयास होगा तो आदमी सम्मानपूर्ण स्थान को भी पाएगा और स्थान को भी बढ़ा सकेगा।

उक्त विचार युवाचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवासमवरण में आंचलिक सामंजस्य कार्यशाला के दूसरे व अंतिम दिन ''कन्या परिवार की शान वह सम्मान कैसे बने'' विषय पर संबोधित करते हुए फरमाये।

युवाचार्यश्री ने फरमाया कि कन्याएं परिवार की शान और सम्मान कैसे बने उसके लिए अपेक्षा है कि एक कन्या में नम्रता और भक्ति का भाव विकसित होना चाहिए उनके व्यवहार में इतनी कुशलता व नम्रता हो जिससे उनको शान व सम्मान मिल सके।

युवाचार्यश्री ने यह भी फरमाया कि महिलाओं के भीतर अनंत शक्ति है, वे अपनी शक्ति को पहचानने का प्रयास करे। अपनी शक्ति को पहचानकर उसे विकसित करने का प्रयास करे। कन्याओं में ऐसा संकल्प जागे कि वे जिस घर परिवार में रहेंगी उस परिवार को स्वर्ग तुल्य बनाने का प्रयास करेंगी। कन्या जिस परिवार में रहेंगी वहां सुख शांति का वातावरण बनाने का प्रयोग करेगी यदि ऐसा संकल्प होगा तो कन्याएं परिवार को सुख और शांति बनाए रखने में सक्षम होगी।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि भारतीय संस्कृति पुरुष प्रधान संस्कृति रही है हमेशा से ही पुरुषों का वर्चस्व रहा हैं यद्यपति वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, वर्तमान वातावरण में पुरुष को चुनौति दे रहा है और वह चुनौति बेटियां दे रही है। अनेक क्षेत्रों में महिलाएं आगे बढ़ रही है। ऐसे वातावरण में कन्याएं अपने अस्तित्व को बनाए रख सकें ऐसा प्रयास होना चाहिए।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सौभाग बैद, सुश्री वंदना कुण्डलिया, डॉ. मृदुला सिन्हा, श्रीमती संतोष व्यास ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल बीदासर की अध्यक्षा श्रीमती शांति बांठिया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम संचालन श्रीमती वीणा बैद ने किया।

महिलाओं के लिए सबसे बड़ा कार्य क्षेत्र उनका परिवार है

– साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य फरमाया कि आज के परिप्रेक्ष्य में विचार करें तो शिक्षा के क्षेत्र में महिलाएं सामाजिक क्षेत्र में, खेल के क्षेत्र में महिलाओं का हौसला बढ रहा है, किसी भी दृष्टि से महिलाएं पीछे नहीं है चाहे चिकित्सा विज्ञान हो, हवा में उड़ने का प्रयास हो सब जगह बेटियां, महिलाएं दिखाई देती है। कन्याएं किसी भी क्षेत्र में जाए वे काम करते समय अपने सुनियोजित गुणों को, शील को सुरक्षित कैसे रखे पर ध्यान देते हुए आगे बढे तो परिवार समाज के लिए भी बहुत अच्छा हो सकता है।

साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा ने आगे फरमाया कि तेरापंथ समाज का जहां तक सवाल है आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैसे सक्षम आचार्यों ने नारी जागरण का जो अभियान चलाया उस अभियान का ही परिणाम है कि आज अखिल भारतीय स्तर पर महिलाएं अपनी संस्था को चला रही है। संस्था के अंतर्गत पूरे देश में इसका नेटवर्क चल रहा है। अनेक रचनात्मक काम हो रहे हैं। अगर आचार्यद्वय का खुला समर्थन मिलता प्रोत्साहन नहीं मिलता, प्रेरणा नहीं मिलती जो शायद महिलाओं की स्थिति यह नहीं होती, वे इतना विकास नहीं कर पाती। महिलाओं के लिए सबसे बड़ा कार्य क्षेत्र उनका परिवार होता है परिवार एक ऐसी पाठशाला है जहां कन्याओं को जीवन जीने की सीख मिलती है कि जीवन कैसा होना चाहिए।

महिलाओं में नेतृत्व, सृजन की ताकत है। महिला में सोच भी है, ताकत भी है। कन्याओं का लक्ष्य एक ही होना चाहिए कि परिवार, समाज की शान बढाना है। माताओं को भी ध्यान देना चाहिए कि अगर कन्याओं का निर्माण करना है तो गलत प्रवृत्तियों से रोकना भी होगा, टोकना भी होगा और अच्छे काम करती है उनमें जो विशेषताएं, गुणवत्ता है उसके लिए प्रोत्साहन भी देना होगा। समाज के लोग यह मानें चाहे महिलाएं है या पुरुष वे ये मानें कि बेटियां उनके घर की इज्जत है, सम्मान है, शोभा है सबकुछ है लेकिन उनमें गुणवत्ता का विकास करने के लिए यह भी आवश्यक है कि उन्हें उचित प्रोत्साहन मिलता रहे।

हनुमानजयंती पर युवाचार्यप्रवर का उद्‌बोधन

दाम्पत्य जीवन में मधुरता और आत्मीयता अपेक्षित है

– युवाचार्य श्री महाश्रमण

बीदासर, 9 अप्रैल, 2009।

तेरापंथ भवन के मघवा समवरण में युवाचार्य महाश्रमण ने हनुमान जयंती पर अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि आज हनुमानजी का जन्म दिवस है, जब हनुमानजी सामने आते हैं तो फिर भगवान राम भी पीछे नहीं रह सकते हैं, सीताजी पीछे कैसे रह सकती है। हनुमानजी एक ऐसे महापुरुष हुए हैं जिनमें लोगों में उनके प्रति श्रद्धा, भक्ति और आस्था का भाव है। एक भक्ति और शक्ति के प्रतीक के रूप में हनुमानजी की प्रतिमा सामने आती हैं जहां एक ओर भगवान राम के प्रति गहरा तादात्म्य भाव और समर्पण का भाव, राम के प्रति कितनी

भक्ति और कितना समर्पण उनमें पुष्ट हो गया। भगवान राम के सामने जब समस्या आ गई थी सीताजी का हरण हो चुका था तो स्वयं भगवान राम भी चिंतित थे। राम और सीता के संबंध को हम देखते हैं तो दाम्पत्य जीवन जीने का एक पथ दर्शन प्राप्त हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में मधुरता और आत्मीयता अपेक्षित होती है। जहां सीता का राम के प्रति समर्पण था रामचन्द्रजी जब वनवास के लिए रवाना हुए तो सीता ने कहा मैं पीछे नहीं रहूंगी मैं पति के साथ रहूंगी कष्ट आएंगे तो आएंगे पति का साथ मैं नहीं छोडूंगी एक समर्पण का भाव भगवान राम के प्रति था। दूसरी ओर देखता हूं तो राम का भी सीता के प्रति इतना तादात्म्य भाव था। सीताजी का हरण हुआ तो दूत किसको बनाया जाए? इस पर विचार हुआ तो उसी समय सुग्रीवजी बोले कि महाराज मेरा निवेदन है कि हनुमानजी को दूत बनाया जाए, ये महापराक्रमी है। हनुमानजी को बुला लिया गया। सुग्रीवजी ने कहा ये हनुमानजी पवन के पुत्र। ये सीता की खोज करेंगे। हनुमानजी ने कहा आप कहो तो पूरी लंका को आपके सामने लेकर आ जाऊंगा। रामजी हुनमानजी को कहते हैं कि हनुमान जाओ और सीता को मेरा संदेश देना कि सीता शरीर तो कहीं ओर है किंतु राम का जीव और आत्मा तो सीता के साथ है।

– अशोक सियोल

---

14 अप्रैल को दिया जायेगा श्रमण संस्कृति का संदेश

बीदासर, 9 अप्रैल।

भारतीय संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 119वीं जयंती 14 अप्रैल को कस्बे के तेरापंथ भवन में तहसील स्तरीय रूप में राष्ट्रीय संत आचार्यश्री महाप्रज्ञ व युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में भारतीय बौद्ध महासभा, अणुव्रत समिति व आचार्य महाप्रज्ञ मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के संयुक्त तत्वावधान में मनाई जायेगी इस संबंध में कस्बे के अम्बेडकरवादी संगठनों के पदाधिकारियों व भारतीय बौद्ध महासभा के सदस्य राजेश लोहिया की सोमवार सायं मुनि सुखलाल व युवाचार्य महाश्रमण के साथ विस्तृत विचार विमर्श हुआ, कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि अम्बेडकर जयंती पर लोगों को ''श्रमण संस्कृति का सन्देश'' विषय की विस्तृत जानकारी दी जावेगी। मुनि सुखलाल ने कहा कि 14 अप्रेल एक पावन दिवस है, डॉ. अम्बेडकर का देश में महत्त्वपूर्ण योगदार रहा है। इसलिए सभी वर्गों को इसमें भाग लेना चाहिए। वार्ता में अणुव्रत समिति के जिलाध्यक्ष चौथमल बोथरा, मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के कमल दुगड़, भंवराल शेषमल, डूंगर मेघवाल, बिरमाराम नायक, अशोक रेगर, मुकेश रेगर, विजेन्द्र मेहरा, जितेन्द्र भार्गव, हरीराम नायक सहित अनेक कार्यकर्त्ता थे।